श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

पाशुपतास्त्रेय साधना

शौर्य शक्ति का विस्तार

जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहते है, तो भगवान शिव की **'पाशुपतास्त्रेय साधना'** के अलावा और कोई ऐसी साधना नहीं है, जो कि जीवन में पूर्णता दे सके।

पाशुपतास्त्रेय साधना सिद्धि हेतु स्वयं विश्वामित्र को कठिन तपस्या करनी पड़ी थी। मार्कण्डेय ऋषि ने एक स्वर में स्पष्ट किया है, कि पाशुपतास्त्रेय साधना जीवन का सौभाग्य है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए, उनसे समस्त साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करने के लिए यही प्रयोग श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

श्रावण मास (30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026) के किसी भी दिन किए जाने वाले इस पाशुपत साधना के **'शिव पुराण'** में कई लाभ बताए गएं हैं -

1. **ग्रह संयोगों एवं स्वयं के कर्म दोषों से साधनाओं में सिद्धि मिलते - मिलते रह जाती है, उन सभी के दुष्प्रभाव भगवान पशुपति की कृपा से समाप्त हो जाते हैं** और उसके कर्म दोषों व ग्रह नक्षत्रों का विपरीत प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है, जिससे किसी भी साधना में सफलता निश्चित हो जाती है।
2. साधक को जीवन में कहीं पर भी असफलता, अपमान या पराजय नहीं देखनी पड़ती।
3. भगवान शिव भाग्य के अधिपति देवता हैं। **जिन का भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हों, तो उन्हें अवश्य ही पाशुपतास्त्रेय साधना सम्पन्न करनी चाहिए।**
4. इस साधना को यदि पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न किया जाए तो **साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।**

इस साधना में **'बाण लिंग'** की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है। **बाण लिंग** को बिल्व पत्र का आसन देकर किसी पात्र में स्थापित करें और निम्न ध्यान मंत्र करें -

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टा प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे
नाना अलंकार युक्तं स्फाटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

शिव जो शान्त स्वरूप हैं, पद्मासन में विराजमान हैं, मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले हैं, जिनके पांच मुख हैं, तीन नेत्र हैं, जो अपने दाहिने भाग की भुजाओं में शूल, वज्र, खड्ग, परशु और अभयमुद्रा धारण करते हैं तथा वामभाग की भुजाओं में सर्प, पाश, घंटा, प्रलयाग्नि और अंकुश धारण किये रहते हैं, उन नाना अलंकारों से विभूषित एवं स्फटिक मणि के समान श्वेत वर्ण भगवान पार्वती ईश को नमस्कार करता हूं।

अब अपने सिर पर एक पुष्प रखें तथा बाण लिंग के सामने भी एक पुष्प रखकर अपने और शिव के परस्पर प्राण सम्बन्ध स्थापित करते हुए निम्न उच्चारण करें -

पिनाक-धृक् इहावह इहावह, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निधत्स्व, यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः।

इसके बाद **'रूद्रयामल तंत्र'** के अनुसार **'रुद्राक्ष माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें -

।। ॐ हर महेश्वर शूलपाणि पिनाक धृक् पशुपति
शिव महादेव ईशान नमः शिवाय।।

यह सम्पूर्ण प्रकार की सफलता देने वाला मंत्र है और इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। शास्त्रों में इसे **'अष्टाष्ट मंत्र'** या **'अष्ट शिव मंत्र'** कहते हैं। प्रयोग समाप्ति के बाद समस्त साधना सामग्री जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठित न्यौ. - 450/-

सद्गुरुदेव अमृत वचन है -

तमसो मा ज्योतिर्गमय,
असतो मा सद्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय।

शिव के अतिरिक्त और कौन है जो हमारे जीवन को प्रकाश सत्य और अमरता की ओर ले जाएगा, पर क्या यह सब बिना शौर्य के संपन्न हो पाएगा?

देखो तुम सब निखिल शिष्य हो, मैं जान रहा हूं जीवन महाभारत है, लेकिन मेरे शिष्य धर्म के साथ खड़े हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे अर्जुन महाभारत में थे, कर्ण अधर्म के साथ था, उसने शक्ति को साधा हुआ था, ऐसे में अर्जुन ने कृष्ण की आज्ञा से अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए तपस्या की और शिव को प्रसन्न किया और उनसे पाशुपतास्त्रेय ग्रहण किया, जिसके द्वारा युद्ध में जीत संभव हो सके।

जहां भी धर्म होगा, वहां शिव आएंगे गुरु रूप में। कर्ण ने गुरु को छलकर विद्या ग्रहण की थी, इसलिए जिस समय उन्हें विद्या की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी उस समय विद्या ने उनका साथ नहीं दिया, क्योंकि गुरु के साथ किया गया छल वापस लौटता है, ऐसा छल करके आप जीत नहीं सकते।

उच्च उद्देश्य के साथ शौर्य का भाव होना चाहिए और शौर्य के साथ सावधानी रखनी चाहिए। शत्रुओं को मारना है, बाधाओं को समाप्त करना है शौर्य का अर्थ बलिदान नहीं, अपितु बाधाओं का बलिदान करना है।

वास्तविक शौर्य अपने आपको मारना नहीं है। पीड़ा और तिल-तिल से मरना नहीं है बल्कि अपने शौर्य से अपनी बाधाओं को समाप्त करना है।

शौर्य का अर्थ है जोश जो आपके बल को विस्तार दे, प्रबलता का भाव दे, संहार का भाव दे।

शिव पुराण के अनुसार शौर्य प्रदायक पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा के द्वादश लाभ इस प्रकार हैं -

1. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, और हर स्थान पर सफलता प्राप्त होती है।
2. जीवन से रोग समाप्त होते हैं और वह पूर्ण निरोगी अनुभव करता है।
3. अकाल मृत्यु भय समाप्त होता है, फलस्वरूप दुर्घटना या मृत्यु की आशंका नहीं रहती।
4. शरीर में ऊर्जा, बल, साहस और क्षमता प्राप्त होती है।
5. गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।
6. भगवान शिव को कुबेराधिपति कहा गया है, इनकी साधना करने से पूर्ण रूप से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
7. योग्य संतान की प्राप्ति होती है।
8. शत्रु अपने आप समाप्त होने लगते हैं और जीवन में शत्रुओं का भय नहीं रहता।
9. जिनका भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हो तो भाग्योदय की स्थिति बनती है।
10. भगवान शिव सम्पूर्ण स्वरूप है। पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा से शिव के भव्य दर्शन सम्भव होते हैं और साधक के जीवन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते है।

पाशुपतास्त्रेय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-